बलि का बकरा

कविता वर्मा

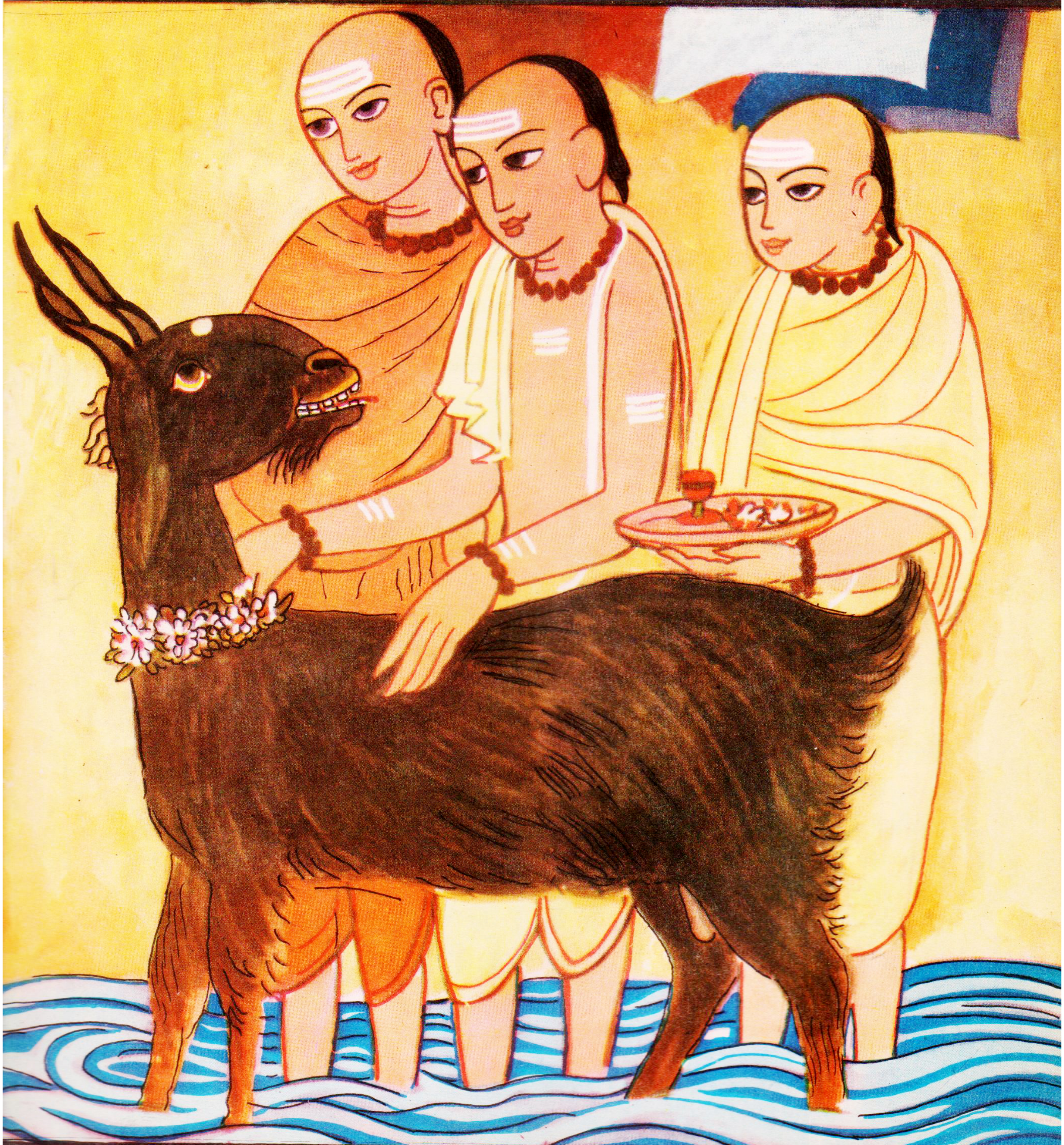

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा
बम्बई

बच्चों की कहानियां

हमारे देश की संस्कृति दुनिया में सबसे पुरानी और काफी समृद्ध है। मगर आपसी झगडों, जलन और बैर की वजह से हम कमज़ोर हो गये हैं और इसी वजह से डरी-सहमी हालत में जो रहे हैं। नये ज़माने की शिक्षा भी हमें सुधार नहीं पाई है। इसीलिए इस कमज़ोर और खतरनाक हालत से हम उबर नहीं पा रहे हैं। फिर भी यह हक़ीक़त है कि हमारी संस्कृति अत्यंत जीवंत है, कभी मिट नहीं सकती है।

दूसरे प्राणियों के मुक़ाबले आदमी में यह एक विशेषता है कि उसमें धर्म की सूझबूझ है। अच्छा-बुरा, धर्म-अधर्म परखने का उसे विवेक है। मैं तो इसे ही सच्चा धर्म मानता हूं। 'धर्म' वही है जिससे आदमी का सुखी, सार्थक जीवन बनता है। धार्मिक इन्सान समझता है कि दूसरों के सुख में उसका भी सुख है। दूसरों को तबाह करके कोई सुखी नहीं हो सकता। दूसरों के दुःख से जो सुख उठाता है, वह अधर्मी है।

सच्चाई और अहिंसा, धर्म पर चलने के दो रास्ते हैं। दुनिया के सभी धर्मों में इन दो बातों पर ज़ोर दिया गया है। हिन्दू, इस्लाम, बौद्ध, ईसाई, पारसी, जैन, सिख आदि सभी धर्मों के पैग़म्बरों ने धर्म के जिन आदर्शों की बात कही है, वह हर इन्सान के लिए समान रूप से लागू होती है। हमारे देश की परंपरा में सब धर्मों के लिए इज्ज़त की भावना रही है। हिन्दू धर्म का दायरा बहुत बड़ा और सबका भला चाहनेवाला रहा है। अफ़सोस है तो इस बात का कि हम लोगों में एक के बाद एक कमजोरियां आती गईं और एक उदार धर्म की अनमोल दौलत हम संभाल नहीं सके।

आज इस बात की जरूरत है कि दुनिया के विकसित धर्मों में हमारे लिए जो आवश्यक बातें कही गयी हैं उन्हें हम समझें और अपने जीवन में उन पर चलने की कोशिश करें।

नई पीढ़ी को सही समझ और शिक्षा देने के लिए ऐसे विचार उनके सामने रखना जरूरी है जिससे वे आदर्शों की तरफ प्रेरित हों और ज़िन्दगी का सही रास्ता उन्हें मिल सके।

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा ने इसी उद्देश्य से दुनिया के मुख्य धर्मों में जो शिक्षाप्रद कहानियां हैं, बडे-बडे संत-पैग़म्बरों की ज़िन्दगी में जो सच्ची घटनाएं हुई हैं, उन्हें लेकर एक सौ सचित्र पुस्तकें छापने की योजना बनाई है।

कहानियां इस तरह रखी गयी हैं कि बच्चों को वे उपदेश नहीं, जीवन से जुडी हुई मालूम हों और आसानी से समझ में आ जायें। मुझे उम्मीद है कि बच्चों के माता-पिता भी इन कहानियों को दिलचस्पी से पढ़ेंगे और अपने जीवन को समृद्ध करेंगे।

मुझे उम्मीद है कि इस कोशिश को पसन्द किया जायेगा, इस पर अमल किया जायेगा और इसका प्रचार किया जायेगा।

मोरारजी देसाई

अध्यक्ष,
हिन्दुस्तानी प्रचार सभा

संपादक : मूलशंकर भट्ट

बच्चों की कहानियां–२४

बलि का बकरा

कविता वर्मा

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा

बम्बई

© हिन्दुस्तानी प्रचार सभा, १९८१

मूल्य :
दो रुपये

मुद्रक :

अकील दीवानजी
ऑनलुकर प्रेस
१६, सासुन डॉक
कोलाबा, बम्बई–४०० ००५

प्रकाशक :

वाडीलाल डगली
मानद मंत्री
हिन्दुस्तानी प्रचार सभा
महात्मा गांधी मेमोरियल बिल्डिंग
बम्बई–४०० ००२

एकमात्र विक्रेता

एस० चन्द एन्ड कंपनी लि०
मुख्य कार्यालय : रामनगर, नयी दिल्ली-११००५५
शो रूम : ४/१६-बी, आसफ अली रोड, नयी दिल्ली-११०००२

शाखाएं :

अमीनाबाद पार्क, लखनऊ-२२६००१
२८५/जे. बिपिनबिहारी गांगुली स्ट्रीट, कलकत्ता-७०००१२
सुल्तान बाजार, हैदराबाद-५००००१
३, गांधी सागर ईस्ट, नागपुर-४४०००२
खजांची रोड, पटना-८००००४
माई हीरां गेट, जालन्धर-१४४००८
१५२, अन्ना सलाए, मद्रास-६००००२
ब्लैकी हाउस, १०३/५, वालचन्द हीराचन्द मार्ग, बम्बई ४००००१
के० पी० सी० सी० बिल्डिंग, रेसकोर्स रोड, बंगलोर-५६०००६
६३१-७ महात्मा गांधी रोड, एरनाकुलम, कोचीन-६८२०११

बलि का बकरा

एक नगर में एक पढ़े-लिखे, विद्वान पंडित जी रहते थे। उन्होंने बड़ी-बड़ी पोथियां पढ़ी थीं और धार्मिक रीति-रिवाजों का उन्हें अच्छा ज्ञान था। नगर के सभी लोग अपने धर्म-कर्म के मामलों में उनसे सलाह लिया करते थे। उन्होंने एक पाठशाला भी खोल रखी थी, जहां रहकर नगर के लड़के पंडित जी से पढ़ना-लिखना सीखते थे।

बड़ा आदर-मान था पंडित जी का।

दशहरे का खुशियों भरा त्योहार आया। उस नगर में दशहरा बड़े धूमधाम से मनाया जाता था। बड़ा भारी मेला लगता, जिसे देखने आसपास के गांवों से भी लोग आते थे।

हर साल इस मौके पर गांव के लोग जानवरों की बलि दुर्गा माता को चढ़ाते थे। उनका विश्वास था कि बलि पाकर दुर्गा माता उन पर कुछ ज्यादा ही कृपा करेंगी। जानवरों की बलि देकर भगवान को खुश करने की बात आज भी कई जगहों पर चलती है।

पंडित जी तो त्योहारों के मुख्य पुरोहित थे, और त्योहार वे काफी धूम-धाम से मनाया करते थे। पूजा में किसी प्रकार की कमी नहीं रहे, इसका उन्हें पूरा ध्यान रहता था।

इस बार पंडित जी पिछले वर्षों के मुकाबले कुछ ज्यादा ही उत्साहित थे। उन्होंने इस बार देवी को प्रसन्न करने के लिए एक बकरे की बलि देने का निश्चय किया था।

पंडित जी ने अपने सभी चेलों को बुलाया और कहा, "इस बार पूजा की सबसे अच्छी तैयारी करनी है। कोई कमी न रहे। इस बार मैं भी एक बकरे की बलि चढ़ाकर देवी को प्रसन्न करूंगा।"

चेले तैयारी में लग गये।

पूजा का दिन आने तक सारी तैयारियां पूरी हो चुकी थीं। खिलौनों-मिठाइयों की दूकानों की तो गिनती ही क्या! सब खूब सजी थीं। जगह-जगह नाच-तमाशे हो रहे थे।

रात को पूजा होनेवाली थी और उसके बाद ही देवी की मूर्ति के आगे एक-एक कर बकरों की बलि चढ़ाई जाने वाली थी। आखिर एक पंडित जी को ही पुण्य कमाना तो नहीं था! दूसरे की गर्दन काटकर पुण्य कमानेवाले कई लोग थे।

पंडित जी के यहां बलि का बकरा अबतक नहीं आया था। वे दूसरे इंतजाम में ज्यादा ही व्यस्त रहे थे।

पंडित जी ने अपने चेलों को बुलाया और कहा, "देखो, बाकी सारा काम तो हो गया है। दुर्गा माता की मूर्ति भी लग चुकी है। बचा है एक काम। बलि के लिए बकरा अबतक नहीं आया है। तुम लोग बाजार जाकर एक काला बकरा खरीद लाओ।"

चेलों ने बाजार जाकर एक मोटा-ताजा बकरा खरीदा। बकरे को नदी में नहलाकर बलि चढ़ाने के लिए तैयार करना था। रात में पूजा के बाद बलि के लिए यदि बकरा तैयार न मिलता तो पंडित जी बहुत नाराज होते।

बलि की बात से लड़के बड़े खुश हुए कि चलो, कल तो हमें खूब मांस खाने को मिलेगा।

बकरे को नदी पर ले जाकर, नहला-धुलाकर वे तैयार करने लगे। उन्हें तो बस मांस और उसका स्वाद ही ध्यान में था।

अचानक बकरा खिलखिलाकर हंस पड़ा। बकरा और आदमी की तरह हंसे? लड़कों के आश्चर्य का ठिकाना न रहा। वे कुछ डरे भी। यह बकरा अपनी मृत्यु सामने देखकर भी हंस रहा है?

उन्होंने हिम्मत करके बकरे से पूछा, "अरे बकरे, क्या तू जानता है कि आज की रात तेरी जिंदगी की अंतिम रात है?

दुर्गा माता के आगे आज रात तेरी बलि दे दी जायेगी। अपनी मौत पर तुझे तो रोना चाहिए, और तू है कि हंस रहा है ? क्या तेरी अक्ल जवाब दे गयी है ?"

बकरे ने हंसकर कहा, " लड़को, तुमलोगों से मैं क्या कहूं ? मुझको अपने गुरुजी के पास ले चलो । वहीं मुझसे मेरे हंसने की वजह पूछना । मैं सब बताऊंगा।"

लड़कों ने बकरे के गले में रस्सी बांधी और पंडित जी के पास ले आये। उन्होंने नदी किनारे बकरे के हंसने की बात पंडित जी को बताई और कहा, "यह बकरा कहता है कि आपके सामने ही यह अपने हंसने का कारण बतलायेगा।"

लड़कों की बात सुनकर पंडित जी को बहुत आश्चर्य हुआ। उन्होंने बकरे से उसके हंसने की वजह पूछी।

बकरे ने जवाब दिया, " पंडित जी, जब आपके चेले मुझे नहला-धुलाकर बलि के लिए फूलों और चंदन से सजा रहे थे, मुझे अचानक अपने पिछले जन्मों की कहानी याद आने लगी। और आश्चर्य की बात यह देखिये कि अपने पिछले जन्मों की याद आने के साथ ही मैं आदमी की बोली समझने भी लगा और बोलने भी लगा।

"कई जन्म पहले मैं भी आपकी तरह आदमी था। इतना ही नहीं, मैं भी एक पूजा-पाठ करनेवाला धार्मिक पंडित था। देवी-देवताओं को चढ़ाने के लिए जीवहत्या करने से पाप नहीं लगता है, इसलिए ईश्वर के नाम पर बलि देकर मैं भी पुण्य का हकदार बनूंगा, ऐसा मैं सोचता था।

" मैंने एक मोटा-ताजा बकरा खरीदा और उसको एक अच्छे दिन भक्ति-भावना के साथ देवी के आगे बलि चढ़ा दिया। मेरी भक्ति और पूजा में कहीं कोई कमी नहीं थी। मैंने तो आशा की थी कि उस बलि से मुझे पुण्य मिलेगा, वरदान मिलेगा। सारे पंडित-पुजारी यही तो कहते थे। मैं भी वरदान की आशा में था पर मिला मुझे जीव-हत्या का भयानक पाप !

"अपने उस पाप का प्रायश्चित मैं कई जन्मों से बार-बार बकरा बनकर और बार-बार अपनी गरदन कटवाकर कर रहा

" कई जन्म पहले मैं भी आपकी तरह आदमी था। "

हूं। गरदन कटवाकर मरने से होनेवाली तकलीफ कोई साधारण तकलीफ नहीं होती। मैंने पुण्य के लिए पाप किया और अबतक उसका दंड पा रहा हूं।

"बकरे के रूप में मेरा यह जन्म, मेरे पाप का अंतिम प्रायश्चित है। इस बार गला कटवाकर मैं अपने पाप से छूट जाऊंगा। फिर मुझे न बकरा बनना पड़ेगा, और न तड़प-तड़पकर मरने का दुःख भोगना पड़ेगा। पंडितजी, मैं मरने की तकलीफ से मुक्त हो जाऊंगा, यह सोच-सोचकर ही मैं खुशी से हंस रहा हूं।"

बकरे की बात सुनकर पंडितजी के होश उड़ गये। लेकिन यह क्या, जो बकरा अभी तक हंस रहा था, अचानक उदास हो गया और उसकी आंखों से आंसू गिरने लगे।

बकरे को रोता देखकर पंडित जी और भी परेशान हुए। उन्होंने बकरे से पूछा, "तुम्हारा दुख-दर्द खत्म होनेवाला है। तुम तो इस बात से कितने खुश थे। हंस रहे थे। फिर अचानक तुम रो क्यों रहे हो ?"

बकरे ने दुखी मन से जवाब दिया, "एक बकरे को काटकर मैंने जो भुगता है, मुझको काटकर वही दर्द, वही तकलीफ अब आपको न जाने कितने जन्मों तक भुगतनी पड़ेगी !

"सामने खड़ी मौत को देखकर कितनी भयानक यातना होती है, यह मैं जानता हूं और गला कटने पर तड़प-तड़पकर जान देने की तकलीफ भी मुझे मालूम है। इसलिए, मेरे मन में आपके लिए बड़ी दया उमड़ रही है। कितनी तकलीफ भुगतनी होगी आपको ! आपके इस दुर्भाग्य को सोचकर ही मैं रो रहा हूं।"

सारी बातें सुनकर पंडित जी की आंखें खुल गयीं।

उन्होंने सोचा, "चलो, अच्छे बचे। समय रहते मुझको पता चल गया कि जीव-हत्या, चाहे वह देवी-देवता की पूजा के लिए ही क्यों न की जाये, एक भयानक पाप है। निरीह पशुओं की बलि देने से देवता खुश नहीं होते हैं, वरना बलि चढ़ानेवाले इस बकरे को जन्म-जन्मान्तर इतनी तकलीफ क्यों झेलनी पड़ती ? आखिर पशुओं को भी ईश्वर ने

ही बनाया है। वह उनके मारे जाने पर खुश क्यों होगा ?"

पंडित जी ने फैसला किया कि वे अब कभी, किसी पशु की बलि नहीं देंगे।

उन्होंने बकरे से कहा, "बकरे, तुम डरो मत। मैं तुम्हारी बलि नहीं दूंगा। तुम घास-पात खाते, खेलते अपनी बाकी उम्र गुजारना और फिर जैसे सब बकरे मरते हैं, तुम्हारी भी साधारण मौत होगी। तुम्हारा यह जन्म सुख-शांति से बीत जायेगा।"

पंडित की बात सुनकर बकरा हंसा और बोला, "महाराज, आपकी दया, क्षमा मेरी सजा तो नहीं बदल सकती। आप मुझे मारें या न मारें, गर्दन कटवाने की तकलीफ भोगकर तो मुझको मरना ही है। अपनी करनी का फल हर किसी को भुगतना ही पड़ता है। आप मुझको नहीं बचा सकते। मेरे पापों की सजा तो मुझे मिलेगी ही।"

पंडित जी ने सोचा कि यह बकरा वैसे ही बकबक करता है। मैं ऐसा नहीं होने दूंगा। जबतक कोई आदमी इस बकरे का गला नहीं काटेगा, इसकी मौत गरदन कटने से भला कैसे हो सकती है।

पंडित जी ने अपने चेलों से सलाह की और तय किया कि वे सब मिलकर उस बकरे की हमेशा रखवाली करेंगे। जहां कहीं भी बकरा जायेगा, वे उसके साथ-साथ जायेंगे। उसे कभी अकेले छोड़ेंगे ही नहीं कि कोई उसे मार सके।

उन्होंने बकरे के गले से रस्सी खोल दी। छूटते ही बकरा जंगल की तरफ भागा।

बकरे के पीछे-पीछे पंडित जी और उनके चेले भी भागे।

जंगल में थोड़ी दूर जाने पर एक ऊंची चट्टान मिली। चट्टान के आसपास हरी-हरी घास लहरा रही थी। घास देखकर बकरा सीधा वहां गया और घास खाने लगा।

पंडित जी और उनके चेले वहीं खड़े बकरे की रखवाली करने लगे। अचानक आसमान में बिजली चमकी और उस ऊंची चट्टान पर ही आ गिरी। बिजली गिरने से चट्टान टुकड़े-टुकड़े हो गया और पत्थर सब तरफ बिखरने लगे। एक बड़ा पत्थर भयानक गति से छिटका और बकरे की गरदन से जा टकराया। उस झटके से बकरे का सर टूट गया, और

" उस झटके से बकरे का सर टूट गया, और खून से सना बकरा तड़पने लगा । "

खून से सना बकरा तड़पने लगा।

पंडित जी और उनके चेलों को भी चोट आयी।

गांव के लोग इकट्ठे हो गये। पंडित जी और उनके चेलों को लोगों ने संभाला। पंडित जी को बड़ा अफसोस था कि इतनी कोशिश करके भी वे बकरे को नहीं बचा सके।

बकरा तो मर गया लेकिन उसने पंडित जी की आंखों से पर्दा हटा दिया। उन्होंने अपने नगर में बलि देने का रिवाज बंद करवा दिया, और अकसर लोगों से कहने लगे कि वह बकरा मेरा गुरू था।

[जातक कथा पर आधारित]

सेवा का फल

छोटी-सी पहाड़ी से घिरा एक सुन्दर आश्रम था।

आश्रम के लोग बड़े मेहनती और दयालु थे। पढ़ना-लिखना और ईश्वर की प्रार्थना-पूजा करना, यही उनका काम था। आश्रम में उनकी जरूरत भर खेती थी, गाय-बकरियां थीं। सभी मेहनत से शाक-सब्जी, अन्न उपजाते थे, गाय-बकरियों की सेवा करते थे। आश्रम में ही वे अपनी जरूरत भर कपड़ा तैयार कर लेते और छोटी-मोटी बीमारियों का इलाज भी पहाड़ी से लायी जड़ी-बूटियों से करते थे।

आश्रम के अहाते में ही मीठे पानी का एक गहरा कुआं था। इसका पानी उनके लिए वरदान था। खाने-पीने-नहाने और खेती सबके लिए इस कुएं का पानी काम आता था।

आश्रम का वातावरण बेहद सुन्दर और शान्त था। तरह-तरह के मीठे फलों से लदे पेड़ थे। बरसात शुरू होते ही झरने बहने लगते थे। झरनों का पानी जगह-जगह इकट्ठा हो जाता था। बरसात के बाद, पहाड़ी पर रहनेवाले जानवर और पंछी इसी पानी से अपनी प्यास बुझाते थे।

एक साल की बात है। गर्मी का मौसम जैसे आग बरसाता आया। इतनी भयंकर गर्मी वहां वर्षों से नहीं पड़ी थी।

जलती धूप और लू के कारण सारी खेती चौपट हो गयी। समय पर बरसात भी नहीं हुई। पेड़-पौधे झुलसने लगे। झरने, कुंड सब सूख गये। एक-एक दिन बिताना भारी पड़ने लगा। लोग हर वक्त आकाश देखते रहते पर बादल का एक टुकड़ा भी आसमान में नहीं दीखता

था। रात में भी गर्म हवा बहती रहती थी।

आश्रम पर जैसे दुर्भाग्य का तूफान फट पड़ा था।

जब खाने के लिए कुछ न बचा तो आश्रम के लोगों ने पहाड़ों-जंगलों की शरण ली। वे सुबह ही पहाड़ियों में चले जाते। भटक-भटककर खाने लायक कंद-मूल खोजकर खाते। जंगली फलों को उबालकर खाते और किसी तरह जिंदा रहने की कोशिश करते।

आश्रम का कुआं मुसीबत की इस घड़ी में उनका सबसे बड़ा सहारा था। उसका पानी अबतक नहीं सूखा था। वही एकमात्र जगह थी जहां आश्रम के सारे लोग इकट्ठे होकर अपनी प्यास बुझाते, गर्मी से परेशान होकर स्नान करते।

लेकिन आश्रम के बाहर, पहाड़ियों में रहनेवाले पशु-पक्षियों के संकट का तो कोई पार न था। वे जिन झरनों के सहारे जीते थे, वे तो कब के सूख चुके थे! प्यास बुझाने के लिए वे पता नहीं कितनी-कितनी दूर जाते।

दिन भर उड़कर जंगलों-मैदानों को पार करते फिर भी पूरा पानी नहीं मिलता। भूख और प्यास से थककर वे कहीं भी बैठ जाते। कुछ पंछियों की मृत्यु भी हो गयी। इधर गर्मी थी कि विकराल से विकराल रूप लेती जा रही थी।

आश्रम के कुएं के पास भी पंछी आते लेकिन कुएं से पानी निकाल तो सकते नहीं थे। थोड़ा-बहुत पानी जो बाहर गिरा रहता था, उसी को पीकर उड़ जाते।

आश्रम में एक बहुत दयालु, कोमल हृदय युवक रहता था। उससे जानवरों की यह दुर्दशा देखी नहीं गयी। उसने सोचा कि ये बेचारे जानवर-पंछी पानी के बिना कितने दिन जिंदा रह पायेंगे? क्या हमलोग कुएं का पानी पीते रहें और इन्हें मरने के लिए छोड़ दें?

काफी सोच-विचारकर उसने एक रास्ता निकाला। उसने एक मोटे-से पेड़ का तना काटा। उसे छीलकर गहरा बनाया। एक बड़ी-सी नाद तैयार हो गयी। नाद को उसने कुएं के बगल में रख दिया।

दूसरे दिन जब आश्रम के सभी लोग तैयार होकर अपने कमंडलों में पानी भरकर, जंगल की ओर, फल-मूल की खोज में चले तो वह युवक उनके साथ

" लड़का दिन भर पानी खींचता और जानबर-पंछी दिन भर पानी पीते रहते । "

नहीं गया। सबके चले जाने के बाद वह कुएं पर आया। बाल्टी उठाकर कुएं में डाली और पानी खींच-खींचकर नाद में उड़ेलने लगा। धीरे-धीरे नाद भर गयी।

जानवर-पंछी आये तो पानी से भरा नाद देखकर उनके आनंद की सीमा न रही। उन्होंने जी भरकर पानी पीया। पानी की खोज में कहीं दूसरी जगह जानेवाले पंछी भी पानी देखकर, वहीं नाद पर उतरने लगे। देखते-देखते प्यासे पशु-पंछिओं की भीड़ लग गयी।

लड़का दिन भर पानी खींचता रहा और जानवर-पंछी दिन भर पानी पीते रहे।

अब हर दिन यही होने लगा। सूरज निकला भी नहीं होता कि गर्मी से बेहाल जानवर-पंछी वहां जमा होने लगते। आश्रम के दूसरे लोग जंगल जाते और वह लड़का पानी खींचना शुरू करता।

पानी भरने के कारण उस लड़के को जंगल जाने और अपने लिए फल-मूल लाने का समय ही नहीं मिलता था। पर उस दयालु लड़के को इस बात की फिक्र ही कहां थी! वह तो बड़े मन से अपने इस काम में डूबा रहता था। उसके साथी कभी-कभी अपने फलों में से दो-चार फल दे दिया करते, तो कभी-कभी उसे एकदम भूखा ही रहना पड़ता था।

पानी की मुश्किल दूर हुई तो जानवर कुछ निश्चिन्त हो चले।

एक दिन उनको अपने साथी लड़के का ख्याल आया, "अरे, यह बेचारा तो सारा दिन हमारे लिए पानी खींचता रहता है। यह कब जंगल जाता है और कब अपने खाने का इंतजाम करता है? हमलोगों के लिए यह इतना परेशान होता है, और हमने कभी इसके बारे में कुछ सोचा ही नहीं! अगर यह लड़का न होता तो हमलोगों की जान कहां बचती? यदि यह लड़का कमजोर हो गया तो हमारे प्यासे मरने की नौबत आ जायेगी।"

पंछियों-जानवरों ने मिलकर फैसला किया कि अब वे जब भी पानी पीने आयेंगे, अपने साथ अपने दोस्त के लिए कुछ-न-कुछ फल-फूल जरूर लायेंगे।

अगली सुबह जब वे पानी पीने आये तो हर जानवर अपने साथ मीठे फलों का गुच्छा लेकर आया।

हाथी पके केले लाया था।

बन्दर ने एक बड़ा-सा बेल उठा रखा था।

गिलहरियां जंगली जामुन लायी थीं,

" अगली सुबह हर जानवर अपने साथ मीठे फलों का गुच्छा लेकर आया । "

तो चिड़ियों ने अपनी चोंच में फलों के गुच्छे लटकाये थे।

फल-ही-फल हो गये।

लड़का मुश्किल में पड़ गया। इतना सारा तो वह अकेला खा नहीं सकता था। उसने सारे आश्रमवासियों को उन फल-फूलों में से हिस्सा दिया।

रोज की यही बात थी।

फल इतने आने लगे कि आश्रम-वासियों को पहाड़ियों में जाने और फलों की खोज में दिन-दिन भर भटकने की जरूरत ही नहीं रह गयी। घर में बैठे-बैठे ही मीठे फलों का ढेर लग जाता। सब जी भर खाते और जो बाकी बच जाता उसे आश्रम के पालतू जानवरों को खिला देते। गर्मी ने जो संकट पैदा कर दिया था, वह जैसे दूर हो गया।

एक ही मौसम हमेशा तो बना रहता नहीं है।

एक दिन आकाश काले बादलों से घिर गया। ठंडी हवा चलने लगी। पेड़ के पत्ते झूमने लगे। धूप की जलन कम हो गयी। मौसम की सूरत ही बदल गयी। काले बादल पहले तो गरजे और फिर बरस पड़े।

मूसलाधार बारिश हुई। सूखे गढ़े, डबरे सब भर गये। थोड़ी देर की बारिश के बाद पहाड़ों से नये झरने फूट पड़े। धूल से गंदी हो गयी प्रकृति पानी में नहाकर हरी-भरी और ताजी हो उठी।

गर्मी का दुखदायी मौसम, बारिश के उस प्रथम झोंके से ही विदा हो गया।

आश्रम और उसके आसपास के इलाकों का जीवन फिर सामान्य हो गया।

पशु-पंछी और आदमी सुख-शांति से जीवन बिताने लगे। लेकिन पशु-पंछी उस दयालु लड़के को नहीं भूले। सब उसकी तारीफ करते और कहते कि यदि तुम न होते तो हम सबको इस वर्ष की गर्मी खा जाती। हममें से कोई नहीं बचता।

लड़का पशु-पंछियों की बात सुनता और कहता, "नहीं, यह तो हम सबने मिलकर किया। यदि मैंने तुम लोगों के लिए पानी खींचा तो तुम सबने हम लोगों के खाने का इंतजाम किया। प्यास और भूख पर हमलोगों ने मिलकर विजय पायी है।

"मेरे नन्हें दोस्तो, संकट में ही नहीं, सामान्य दिनों में भी यदि हम एक-दूसरे की इसी प्रकार मदद करें तो किसी को दुख, तकलीफ हो ही नहीं।"

(जातक कथा पर आधारित)

हमारे आगामी प्रकाशन

- सावित्री की कहानी
- संत मूलदास
- हजरत राबिया बसरी
- मीरा
- सच्ची मित्रता
- दैत्य से देव
- गुरू गोविंद सिंह
- कौन जीता ?
- नटखट कृष्ण कन्हैया
- सच की जीत

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा की स्थापना १९३८ में महात्मा गांधी की प्रेरणा तथा पेरीन बहन केप्टन के सद्प्रयत्नों से हुई थी। इस संस्था की कोशिश ऐसी राष्ट्रभाषा विकसित करने की रही है, जिसे आम जनता आसानी से समझ सके और जो नागरी व उर्दू दोनों लिपियों में लिखी जा सके। वह भाषा है हिन्दुस्तानी !

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा दुनिया के सभी धर्मों से चुनी हुई, ज्ञान और आनन्द से भरी कहानियों की एक सौ किताबों का जो सेट बच्चों के लिए तैयार कर रही है, यह उसकी तीसरी किश्त है। इस सेट के हर किताब की कीमत दो रुपये होगी।

बच्चों की कहानियां

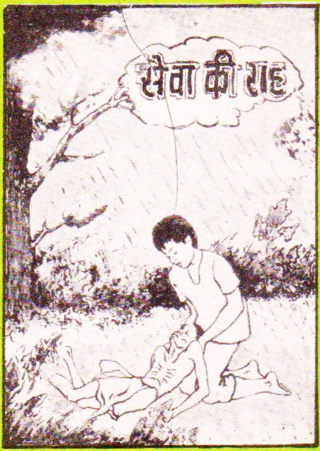

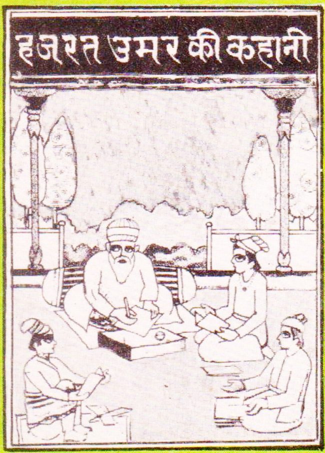

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा

महात्मा गांधी मेमोरियल बिल्डिंग

बम्बई-४०० ००२

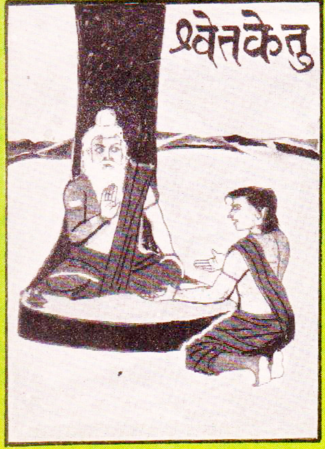

एकमात्र विक्रेता – **एस. चांद एंड कंपनी लि.**

पोस्ट बॉक्स नं. ५७३३

राम नगर, नयी दिल्ली – ११००५५